

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 4, 2 कुरिन्थियों 3, नई वाचा की सेवकाई

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 4, 2 कुरिन्थियों 3, नई वाचा की सेवकाई है।

हम 2 कुरिन्थियों के अध्याय तीन पर आते हैं।

हम पॉल की सेवकाई पर नज़र डालने जा रहे हैं और पॉल को नई वाचा के एक सेवक के रूप में देखेंगे। आइए हम यह कहकर शुरू करें कि समाज में आलोचनाएँ आम बात हैं, और सेवक भी इससे अछूते नहीं हैं। आम तौर पर, हम देखते हैं कि लोग अपने पैमाने तय करते हैं; वे मूल्यांकन के साधन के रूप में अपने स्वयं के मापने वाले छड़ लगाते हैं। वे अपनी समझ के आधार पर सेवक का मूल्यांकन करना चाहते हैं।

सवाल यह है कि ऐसी आलोचनाओं का जवाब कैसे दिया जाए। यह उन सवालों में से एक है जिसका जवाब हम 2 कुरिन्थियों अध्याय 3 को देखते हुए देने जा रहे हैं। और, बेशक, हम एक और सवाल पूछेंगे। एक मंत्री कौन है? एक मंत्री को किस पैमाने से मापा जाना चाहिए? वास्तव में एक मंत्री क्या होता है? आप देखिए, अगर मंत्री को भटकने से बचना है और परमेश्वर के प्रति वफादार रहना है, तो केवल परमेश्वर के मानक ही मायने रखते हैं। आप देखिए, पौलुस को कुरिन्थियों द्वारा सभी तरह की आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, और ऐसी आलोचनाओं का सामना करते हुए, पौलुस को इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि वह कौन था और परमेश्वर ने उसे क्या करने के लिए बुलाया था।

दूसरे शब्दों में, उसे परमेश्वर के बुलावे और उद्देश्य का बहुत स्पष्ट बोध था, जो हम सभी सेवकों के पास होना चाहिए। इस प्रकार, वह न केवल सहन कर सकता था, बल्कि उन सभी आलोचनाओं का दृढ़ता से खंडन भी कर सकता था जो उस पर की जाती थीं। जैसा कि पौलुस इस अध्याय में तर्क देगा, वह नई वाचा का सेवक था।

आइए पद 1 से पद 6 तक पढ़ें। क्या हम फिर से खुद की प्रशंसा करना शुरू कर रहे हैं? निश्चित रूप से, हमें कुछ लोगों की तरह, आपके लिए या आपसे सिफ़ारिश के पत्रों की ज़रूरत नहीं है, है न? आप स्वयं हमारे दिलों पर लिखे गए एक पत्र हैं जिसे सभी को जानना और पढ़ना चाहिए। क्या आप निश्चित हैं कि आप हमारे द्वारा तैयार किए गए मसीह के पत्र हैं, जो स्याही से नहीं बल्कि जीवित परमेश्वर की आत्मा से, पत्थर की पट्टियों पर नहीं, बल्कि मानव हृदय की पट्टियों पर लिखे गए हैं? ऐसा ही भरोसा हमें मसीह के ज़रिए परमेश्वर के प्रति है, न कि हम खुद से यह दावा करने के लिए सक्षम हैं कि यह हमसे आता है। हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है, जिसने हमें एक नई वाचा के सेवक होने के योग्य बनाया है, न कि पत्र के बल्कि आत्मा के, क्योंकि पत्र मारता है, लेकिन आत्मा जीवन देता है।

आइए जल्दी से अध्याय 2, पद 17 पर वापस जाएं, जहां पौलुस एक ऐसा कथन देता है जो इन बातों के लिए पर्याप्त है, और फिर वह खुद को उन बहुत से लोगों से अलग करता है जो परमेश्वर के वचन के विक्रेता हैं। इसलिए, पौलुस अब कुरिन्थियों के मन में न केवल अपनी सेवकाई की पर्याप्तता, अपनी सेवकाई की पर्याप्तता, बल्कि उन विक्रेताओं के लिए अपनी सेवकाई की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास जारी रखता है। और पौलुस यह दिखाने जा रहा था कि उसकी सेवकाई मसीह-केंद्रित है और अपनी खुली घोषणा में साहसी है।

जब आप अध्याय 3, पद 1 पढ़ते हैं, और आप देखते हैं कि क्या हम खुद की प्रशंसा करना शुरू कर रहे हैं, तो आप पहला सवाल देखते हैं: क्या हमें, निश्चित रूप से, दूसरों की तरह, अनुशंसा पत्र की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए? इन सवालों का जवाब नहीं होगा। इन दोनों सवालों में से प्रत्येक के पीछे, जिनमें से दोनों का उत्तर नहीं है, पॉल के खिलाफ एक वास्तविक आरोप या अपेक्षित आरोप है।

आप देखिए, अध्याय 2, श्लोक 14 से 16 में, पौलुस ने प्रेरितों की भूमिका के बारे में बात की है, जो जीवन की खुशबू के रूप में हैं, और उसने अध्याय 2, श्लोक 17 में अपने दिव्य आदेश के बारे में बात की है। अब, कुछ लोग कह सकते हैं, ओह, चलो, वह अब शेखी बघार रहा है। कुछ लोग कह सकते हैं, पौलुस, एक बार फिर, ओह, तुम लिप्त हो रहे हो; तुम आत्म-प्रशंसा की अपनी कुख्यात आदत में लिप्त हो रहे हो।

और पॉल कहते हैं कि नहीं, ऐसा नहीं हो रहा है। पॉल ने जो दूसरा दावा किया है, वह उन लोगों में से कुछ लोगों द्वारा किया गया था जो प्रचार से लाभ कमा रहे हैं। क्या यह आज के समय की तरह नहीं लगता? मंत्रालय व्यवसाय बन गया है।

पॉल कहते हैं, नहीं, मैं ऐसा नहीं हूँ। आप देखिए, चूँकि यरूशलेम ईसाई धर्म का एक स्रोत है, इसलिए यरूशलेम से बाहर चलने वाले किसी भी व्यक्ति को सिफ़ारिश के पत्रों के ज़रिए अपने कमीशन का सबूत देने में सक्षम होना चाहिए। इनमें से कुछ लोग शायद कह रहे होंगे, हम कुरिन्थियों के पास आए, यरूशलेम से लिखित पत्र लाए।

पॉल कहते हैं कि मुझे दूसरों की तरह प्रशंसा पत्र की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, उन्होंने खुद को अलग रखा, उन्होंने अपने प्रेरितिक मंत्रालय का बचाव किया, और पॉल ने खुद और कई लोगों के बीच एक दूरी बना ली। आप देखिए, यह एक व्यावहारिक निहितार्थ और प्रभाव वाला धार्मिक मुद्दा है।

पॉल कहते हैं, वे वहाँ हैं, मैं यहाँ हूँ। धर्मशास्त्र के संदर्भ में, सिद्धांत के संदर्भ में, हम सहमत नहीं हैं। मुझे परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया है; पवित्र आत्मा ने मेरे मंत्रालय के माध्यम से जीवन बदल दिया है।

नई वाचा की तरह, उसकी सेवकाई भी परमेश्वर की महिमा को साझा करती है। मूसा की अधिकांश सेवकाई की तरह, उसकी अपनी सेवकाई भी कठोरता को दूर करती है। इसलिए, पौलुस के पास इस अध्याय में कहने के लिए बहुत कुछ है।

एक सच्चा सेवक कौन है? सेवकाई के लिए एक व्यक्ति को क्या योग्यता प्राप्त होती है? ये ऐसे प्रश्न हैं जो आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने उस समय थे जब पॉल 2 कुरिन्थियों को लिख रहा था। इसलिए, ऐसा लगता है, या ऐसा प्रतीत होता है, कि कुरिन्थ में कुछ घुसपैठियों ने पॉल के पास सिफ़ारिश पत्र न होने पर सवाल उठाया है। अब आप समझ गए होंगे कि सिफ़ारिश पत्र से हमारा क्या मतलब है।

यदि आपने कभी नौकरी की तलाश की है, तो आपसे उन लोगों के नाम बताने के लिए कहा गया होगा जिनसे भावी नियोक्ता आपके बारे में संदर्भ पत्र मांगने के लिए संपर्क कर सकता है। आप देखिए, परिचय पत्रों का अपना स्थान है। वास्तव में, इनका उपयोग प्रारंभिक चर्च में घुमंतू प्रचारकों की साख स्थापित करने के साधन के रूप में किया जाता था।

वास्तव में, जब आप रोमियों के अध्याय 16, श्लोक 1 और 2 को देखते हैं, तो आप पाते हैं कि हम सिफ़ारिश के पत्रों के संदर्भ में क्या बात कर रहे हैं। पॉल रोमियों 16, श्लोक 1 और 2 में इसके बारे में बात करता है। मैं इसे आपके लिए पढ़ूंगा। और आप देख सकते हैं, यहाँ यह है, रोमियों 16, 1 और 2। ठीक है, अब हम यहाँ हैं।

मैं आपको हमारी बहन फोबे की सलाह देता हूँ, जो सेंट क्रॉइक्स के चर्च की एक डीकनेस है, कि आप उसे प्रभु में संतों के अनुरूप स्वीकार करें और उसे आपकी ओर से जो भी चाहिए उसमें उसकी मदद करें। क्योंकि वह बहुतों की और मेरी भी सहायक रही है। और आप फिर से 1 कुरिन्थियों के अध्याय 16, श्लोक 10 और 11 में देखें।

इसलिए कोई भी उसे तुच्छ न समझे। उसे शांति से उसके मार्ग पर भेज दे, ताकि वह मेरे पास लौट आए, क्योंकि मैं भाइयों के साथ उसका इन्तजार कर रहा हूँ। जहाँ तक हमारे भाई अपुल्लोस का सवाल है, मैंने उसे दूसरे भाइयों के साथ तुम्हारे पास आने के लिए बहुत आग्रह किया था, लेकिन वह अभी आना नहीं चाहता था।

वह तब आएगा जब उसे अवसर मिलेगा। इसलिए, पॉल को भी खुद दूसरे लोगों को प्रशंसा या सिफ़ारिश के पत्र देने पड़े और उन्हें बताना पड़ा। लेकिन पॉल कहते हैं, नहीं, मैं इससे मुक्त हूँ।

मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। उसे कुरिन्थियों के लिए अपनी सेवकाई के लिए सिफ़ारिश के पत्रों की ज़रूरत नहीं थी। यही हम पद 1 में पढ़ते हैं। क्या हमें किसी पत्र की ज़रूरत है? क्या हम खुद की प्रशंसा करते हैं? आप देखिए, आज हम प्रशंसा के पत्र की तुलना कर सकते हैं, जिसमें समन्वय का प्रमाण पत्र, सिफ़ारिश का पत्र या धर्मशास्त्र में अकादमिक डिग्री शामिल हो सकती है।

मेरा मतलब है, कुछ चर्च आपको नौकरी नहीं देते, सिवाय इसके कि आपके पास न्यूनतम डिग्री हो, देवत्व के दुष्ट स्वामी। कभी-कभी यह कागज, वाक्पटुता या व्यक्तिगत करिश्मा भी नहीं होता। बहुत से लोग सोचते हैं कि समन्वय का प्रमाण पत्र, या धर्मशास्त्र में डिग्री होने का मतलब है कि आपके पास मंत्रालय के लिए योग्यता है।

जरूरी नहीं। आपके पास यह सब हो सकता है। जैसा कि हम इसे इस तरह से कहते हैं, आपके नाम के पीछे थर्मामीटर जितने डिग्री हो सकते हैं।

अगर आपको भगवान ने नहीं बुलाया है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जबकि ये चीजें महत्वपूर्ण हैं, और मुझे गलत मत समझिए, ये चीजें महत्वपूर्ण हैं। मुझे याद है कि किसी ने जॉन वेस्ले से बात की थी।

कहानी कुछ इस तरह है। उस व्यक्ति ने जॉन वेस्ले से कहा कि भगवान को आपकी शिक्षा या आपके ज्ञान में कोई दिलचस्पी नहीं है। जॉन वेस्ले ने कहा कि भगवान को आपकी अज्ञानता में कोई दिलचस्पी नहीं है या उस पर गर्व नहीं है।

तो, यह या तो-या वाला मामला नहीं है। इसलिए, हम यह नहीं कह रहे हैं कि धर्मशास्त्र का अध्ययन करना महत्वपूर्ण नहीं है। बेशक, यह महत्वपूर्ण है।

इसके लिए एक जगह है ताकि हमारा सिद्धांत ठोस हो सके और हम वचन को बहुत अच्छी तरह से समझा सकें। लेकिन हम कह रहे हैं कि यह प्राथमिक बात नहीं है। परमेश्वर की ओर से बुलावा, परमेश्वर की ओर से प्रमाण-पत्र, वह पहली और सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है जिसकी हमें सेवकाई में ज़रूरत है।

और यह आज हमारे लिए बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। वह कहते हैं कि हमें पत्रों की आवश्यकता नहीं है। जबकि ये चीजें महत्वपूर्ण हैं और उनका अपना स्थान है, यह समझना चाहिए कि कागज का एक टुकड़ा, अपने आप में कभी भी उचित प्रमाण पत्र नहीं होता है।

सेवकाई की सच्ची साख जीवन बदल देती है। हम जीवित पत्र बन जाते हैं। पौलुस के कार्य और आदेश की पुष्टि उसकी सेवकाई के परिणामों से हुई।

मुझे एनी जॉनसन फ्लीट की लिखी बात बहुत पसंद आई, जो बहुत अच्छी तरह कहती है। इसमें कहा गया है कि हम ही एकमात्र बाइबल हैं जिसे लापरवाह दुनिया पढ़ेगी। हम पापियों का सुसमाचार हैं।

हम उपहास करने वालों का धर्म हैं। हम प्रभु का अंतिम संदेश हैं, जो कर्म और वचन में दिया गया है। क्या होगा अगर टाइप टेढ़ा हो? क्या होगा अगर प्रिंट खून का हो? हम मसीह का संदेश हैं।

और पॉल कहता है, सुनो, मुझे परमेश्वर ने बुलाया है। परमेश्वर ने मुझे बुलाया है। उसने कहा कि मुझे सिफ़ारिश के पत्र की ज़रूरत नहीं है।

आप देखिए, पॉल के विरोधियों ने प्रमाण-पत्र के रूप में पत्र रखे थे। बेशक, जब आप रोमियों के अध्याय 16, पद 1 को पढ़ते हैं, तो आप प्रेरितों के काम अध्याय 9, पद 2 को पढ़ते हैं, पॉल खुद अपने धर्म परिवर्तन से पहले एक पत्र लेकर जा रहा था। वह दमिश्क के रास्ते पर था।

वह दमिश्क जा रहा था, और उसने अध्याय 22, श्लोक 5 में इसे दोहराया। इसलिए जब आप 2 कुरिन्थियों अध्याय 3 में प्रशंसा पत्रों के बारे में पढ़ते हैं, तो आप जानते हैं कि पौलुस कहाँ से आ रहा है। क्योंकि यह कुछ ऐसा है जो प्राचीन काल में किया जाता था। और क्योंकि पौलुस ने इन लोगों को एक भी पत्र नहीं दिया, वे कह रहे हैं, ठीक है, उसे हमें अपना पत्र दिखाने दो।

पॉल कहते हैं, क्या हमें दूसरों की तरह प्रशंसा के पत्रों की ज़रूरत है? वह कहते हैं, नहीं, क्योंकि आप स्वयं, सुसमाचार में हमारे पत्र हैं। मेरा मतलब है, यह एक शक्तिशाली कल्पना है। यह एक साहसिक बयान देता है।

कुरिन्थ के विश्वासियों को बुलाना ही पत्र है। वे मसीह के पत्र थे जो प्रेरितों की सेवकाई द्वारा पवित्र आत्मा के साथ लिखे गए थे। प्रेरितों की सेवकाई द्वारा।

उन्हें परमेश्वर द्वारा प्रमाणित किया गया था। पौलुस इन लोगों को यह समझाने के लिए एक शक्तिशाली कथन दे रहा है कि वह वास्तव में प्रेरित था। आप देखिए, उनके जीवन में, लोगों के जीवन में परमेश्वर की यह गतिविधि, पौलुस के अपने हृदय पर अमिट रूप से लिखी गई थी।

वह यह नहीं भूल सकता था कि सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से आत्मा उनके जीवन में कैसे चली थी। और, बेशक, पद 3 में, पौलुस यह स्पष्ट करता है कि यह दिव्य कार्य उनके अपने दिलों और जीवन पर लिखा गया था। इसका मतलब यह है कि अगर किसी पत्र को पढ़ा जाना है तो उसे सुपाठ्य होना चाहिए।

यह तार्किक और सुसंगत भी होना चाहिए। अन्यथा, पत्र अर्थहीन है। सबसे बढ़कर, एक पत्र में लेखक के विचार और व्यक्तित्व को व्यक्त करना चाहिए।

और आप इसे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। क्या आपको कभी किसी से पत्र मिला है? एक बार जब आप पत्र पढ़ लेते हैं, तो आप हमेशा उस व्यक्ति के मूड को बता सकते हैं क्योंकि आप उस व्यक्ति से परिचित हैं। आप उस व्यक्ति को अच्छी तरह से जानते हैं, और जब आप वाक्य पढ़ते हैं, तो आप बता सकते हैं कि वह व्यक्ति मुस्कुरा रहा है या भौंहे चढ़ा रहा है।

क्योंकि आप उस व्यक्ति की आवाज़ सुनने के बहुत आदी हैं, और वैसे, क्या हमें बाइबल को ठीक इसी तरह नहीं पढ़ना चाहिए? परमेश्वर की आवाज़ सुनने के लिए। परमेश्वर की आवाज़ सुनने के लिए।

क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? उदाहरण के लिए, जब आपकी पत्नी आपको पत्र लिखती है, तो आप सिर्फ़ शब्द नहीं पढ़ रहे होते हैं। आप उसकी आवाज़ सुन रहे होते हैं। भले ही आप शब्द पढ़ रहे हों, लेकिन आप वास्तव में पत्र के ज़रिए अपनी आवाज़ सुन रहे होते हैं।

आप पढ़ रहे हैं, लेकिन आप आवाज़ सुन रहे हैं। और आप लगभग शब्द दर शब्द कह सकते हैं; वह इसे इस तरह पढ़ती है। वह इसे इस तरह लिखती है।

और इसलिए, पॉल कहते हैं, तुम हमारी चिट्ठियाँ हो। एक चिट्ठी। कुरिन्थियों के बीच पॉल की प्रभावशाली सेवकाई ने उसके बुलावे की वैधता की गवाही दी।

जो लोग इन परिणामों से परिचित थे, उन्हें प्रेरितों से परिचय और प्रशंसा के किसी पत्र की आवश्यकता नहीं थी। आप देखिए, आज विश्वासियों को यह समझना चाहिए कि मसीह का पत्र होना कोई चुनाव का विषय नहीं है। क्या हम मसीह के पत्र बनना चाहते हैं या नहीं? यह चुनाव का विषय नहीं है।

हमें यह समझना चाहिए कि हम मसीह के पत्र हैं, न केवल चर्चों में बल्कि विभिन्न सामाजिक संदर्भों में भी। हमें जहाँ कहीं भी खुद को पाते हैं, जैसे कि स्कूल, कार्यालय, कार्यस्थल, जहाँ भी हम खुद को पाते हैं, हमें मसीह के पत्र होने चाहिए।

हम मसीह के पत्र हैं। तो, सवाल यह है कि हम किस तरह का पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं? लेकिन फिर से एक और बात पर ध्यान दें। आप इस अंश की कॉर्पोरेट बारीकियों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते।

यह सामुदायिक है। पूरी मण्डली मिलकर एक ही पत्र बनाती है। इसे 2 कुरिन्थियों में पढ़ें।

इसमें यह नहीं कहा गया कि आप अक्षर हैं। आप हमारे हृदय पर लिखे गए मसीह के अक्षर हैं। यह अभिविन्यास में, विचार में सामूहिक है।

आज स्थानीय मण्डली के लिए यह कितना महत्वपूर्ण सबक है। हालाँकि हम व्यक्तिगत रूप से बचाए गए हैं, फिर भी एक साथ, सामूहिक रूप से, विश्वास के समुदाय के रूप में, हम मसीह के जीवन को दर्शाते हैं। एक साथ।

साथ में। आप देखिए, पॉल ने दिखाया है कि उनके सिफ़ारिश पत्र उनके आलोचकों के पत्रों से कहीं बेहतर हैं। उनके आलोचकों के पत्र मानवीय रूप से लिखे गए थे और कागज़ पर लिखे गए थे।

पौलुस की सेवकाई के बारे में क्या? प्रामाणिक सेवकाई के बारे में बात करते हुए, क्या वह स्वयं नियुक्त था? क्या उसकी सेवकाई उसके व्यक्तिगत विकास का परिणाम थी? इन सवालों का जवाब है नहीं। उसकी सेवकाई परमेश्वर पर उसके अटूट विश्वास से भी सत्यापित थी। यह परमेश्वर ही था जिसने उसे सेवा के लिए सशक्त बनाया था।

आप देखिए, परमेश्वर के सामने पौलुस का यह दावा कि कुरिन्थियों का पत्र मसीह द्वारा लिखा गया था, मसीह के माध्यम से आया था, उसका आत्मविश्वास था। यह किसी पवित्र इच्छा या कल्पना का उत्पाद नहीं था। आप देखिए, कोई भी व्यक्ति अपने संसाधनों और ताकत पर छोड़ी गई सेवकाई के लिए पर्याप्त होने का दावा नहीं कर सकता।

इसलिए, अपील की अंतिम अदालत पद 5 और 6 में परमेश्वर की अपनी सक्षमता है। और सेवकाई का एकमात्र समर्थन वह है जो परमेश्वर की दृष्टि में खरा उतरे और मसीह के प्रति सच्चा

हो। मैं वही दोहराता हूँ जो मैंने अभी कहा है। अपील की अंतिम अदालत परमेश्वर की अपनी सक्षमता शक्ति है।

और, बेशक, सेवकाई का एकमात्र समर्थन जो पाने लायक है वह वह है जो परमेश्वर की दृष्टि में खरा उतरे और मसीह के प्रति सच्चा हो। इसलिए जब हम यहाँ प्रामाणिक सेवकाई के बारे में बात करते हैं, तो हम आत्मा की सेवकाई के बारे में बात कर रहे हैं। एक ऐसी सेवकाई जो आत्मा द्वारा निर्देशित और निर्देशित होती है।

पद 6 में पौलुस ने महसूस किया कि ईश्वरीय रूप से नियुक्त होने का अर्थ है ईश्वरीय रूप से सुसज्जित होना। ईश्वरीय रूप से नियुक्त होने के लिए, उसे नई वाचा का सेवक बनने के लिए दमिश्क की यात्रा के दौरान उपकरण दिए गए, जब उसे ईश्वर का चुना हुआ साधन नामित किया गया और वह आत्मा से भर गया। इसलिए, नई वाचा का सेवक आत्मा की सेवकाई है।

और बेशक, यह अनुग्रह की सेवकाई है। पौलुस पुरानी और नई वाचाओं की दो बुनियादी विशेषताओं के बीच अंतर बताने जा रहा है। आप देखिए, यहोवा और इस्राएल के बीच पुरानी वाचा का आधार मूल रूप से एक बेजान लिखित संहिता थी।

वाचा की पुस्तक में, आप इसे निर्गमन अध्याय 24, पद 7 में देखते हैं। लेकिन परमेश्वर और कलीसिया के बीच नई वाचा का आधार एक गतिशील, व्यापक आत्मा है। पत्र के लिखित कोड ने मृत्यु की घोषणा की, मृत्यु की सजा। आप इसे रोमियों अध्याय 7, पद 9 से 11 में देखते हैं।

लेकिन आत्मा जीवन में परिवर्तन लाती है। हालाँकि मसीह के लहू के बहाए जाने से नई वाचा की पुष्टि हुई थी और इसका प्रतीक भोज के प्याले में है, लेकिन यह परमेश्वर की आत्मा के द्वारा क्रियाशील होती है, जो हमें नया जीवन देती है। जहाँ पत्र शक्तिहीन था, वहाँ आत्मा शक्तिशाली है।

आत्मा जीवन में पवित्रता उत्पन्न करने और हमें विश्वासियों के रूप में व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाने में शक्तिशाली है। मेरा मतलब है, आप पौलुस की सेवकाई और पुरानी वाचा के बीच एक बड़ा अंतर देखते हैं। यह परमेश्वर ही था जिसने उसे सेवा के लिए सशक्त बनाया।

पौलुस का आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण से नहीं बल्कि मसीह के माध्यम से उत्पन्न हुआ था। पौलुस ने सुसमाचार की अपनी घोषणा के माध्यम से प्रभु को समझा। सुसमाचार की अपनी घोषणा के माध्यम से चलते हुए, वह अच्छी तरह से जानता था कि यही वह चीज़ थी जिसने उसे पर्याप्त बनाया।

इसलिए, जब पौलुस ने अध्याय 2 में प्रश्न पूछा, क्या यह इन बातों के लिए पर्याप्त है? अब वह उस प्रश्न का उत्तर थोड़ा-थोड़ा करके दे रहा है, और वह नई वाचा की असाधारण महिमा के बारे में बात करने जा रहा है। लेकिन इस बीच, पद 6 में, वह अधिक स्पष्ट रूप से और अधिक पूर्ण रूप से उस पर्याप्तता का वर्णन करता है जो परमेश्वर प्रदान करता है। उसने कहा कि परमेश्वर ने हमें सेवकों के रूप में पर्याप्त बनाया है।

इस बारे में फिर से सोचें। हमारे पिछले सत्र में, जब हमने अध्याय 2 की जाँच की थी, तो हमने इस तथ्य का उल्लेख किया था कि पौलुस ने विश्वासियों के विश्वास पर अपना प्रभुत्व नहीं जमाया। अब वह फिर से कहता है, परमेश्वर हमें पर्याप्त सेवकों के रूप में सशक्त बनाता है।

वह हमें दूसरों पर प्रभुता करने के लिए सशक्त नहीं करता। बल्कि, परमेश्वर हमें उसकी सेवा करने और दूसरों की सेवा करने के लिए सशक्त बनाता है। परमेश्वर हमें एक नई वाचा के सेवक के रूप में सशक्त बनाता है।

यह तथ्य कि परमेश्वर ने कुरिन्थियों के हृदयों पर लिखा, यह दर्शाता है कि पौलुस और उसके सहकर्मी नई वाचा के योग्य सेवक थे। इसलिए, पौलुस की सेवकाई आत्मा की सेवकाई थी, यह अनुग्रह की सेवकाई थी, यह मसीह-केंद्रित सेवकाई थी, यह मेल-मिलाप की सेवकाई थी, यह ऐसी सेवकाई थी जिसकी विशेषता ईमानदारी थी। इसलिए, जब आप पूछ रहे हैं कि एक प्रामाणिक सेवक कौन है, तो हम इन सवालों का जवाब देना शुरू करते हैं जब हम 2 कुरिन्थियों अध्याय 3, अध्याय 4 को देखते हैं, और आगे बढ़ते हैं।

फिर, श्लोक 7 से, यदि मृत्यु की सेवकाई अक्षरों या पत्थर की पट्टियों में तराशी गई थी, ताकि इस्राएल के लोग मूसा के चेहरे की महिमा के कारण उसके चेहरे को न देख सकें, जो अब अलग रखी गई महिमा है, तो आत्मा की सेवकाई कितनी अधिक महिमा में आएगी? क्योंकि यदि दण्ड की सेवकाई में महिमा थी, तो औचित्य की सेवकाई में महिमा और भी अधिक होगी। वास्तव में, जो एक बार महिमा थी, उसने अधिक महिमा के कारण अपनी महिमा खो दी है। क्योंकि यदि जो अलग रखा गया था, वह महिमा के माध्यम से आया, तो स्थायी आने वाली महिमा के रूप में और भी अधिक।

तब से, हमें ऐसी आशा है। हम बहुत साहस के साथ काम करते हैं, मूसा की तरह नहीं जिसने इस्राएल के लोगों को उस महिमा के अंत को देखने से रोकने के लिए अपने चेहरे पर पर्दा डाला था जिसे अलग किया जा रहा था। लेकिन उनके मन कठोर हो गए थे।

वास्तव में, आज भी, जब वे पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो वही परदा अभी भी वहाँ है क्योंकि केवल मसीह में ही इसे अलग किया गया है। वास्तव में, आज भी, जब भी मूसा को पढ़ा जाता है, तो उनके मन पर एक परदा पड़ा रहता है। लेकिन जब कोई प्रभु की ओर मुड़ता है, तो परदा हट जाता है।

अब, प्रभु आत्मा है, और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है। और हम सभी खुले चेहरों से, प्रभु की महिमा को देखते हुए, मानो दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं, एक ही छवि में महिमा की एक डिग्री से दूसरी डिग्री में परिवर्तित होते जा रहे हैं। क्योंकि यह प्रभु, आत्मा से आता है।

अब तक, अध्याय 3 में, पौलुस का विचार आत्मा द्वारा उनके हृदयों पर लिखे गए प्रशंसात्मक पत्रों के विचार से आगे बढ़कर यिर्मयाह के माध्यम से परमेश्वर द्वारा वादा किए गए नए वाचा पर चिंतन करने तक पहुँच गया है, जिस पर प्रभु लोगों के हृदयों पर लिखा जाएगा। आप इसे यिर्मयाह

अध्याय 31, पद 31 से 34 में देखते हैं। अब, वह उद्धरण पौलुस को पुरानी और नई वाचाओं और पुरानी और नई अर्थव्यवस्थाओं की तुलना सुनने के लिए प्रेरित करता है।

हर एक में एक सेवकाई शामिल थी जिसके साथ महिमा भी थी, लेकिन नई वाचा की महिमा इतनी श्रेष्ठ थी कि पुरानी वाचा की महिमा तुलना में महत्वहीन हो गई। इसका यही अर्थ है। यह ऐसा है जैसे आपके पास एक मोमबत्ती की रोशनी है, और आपके पास बस यही है।

आप मोमबत्ती की रोशनी में देखते हैं, लेकिन अचानक बिजली वापस आ जाती है, और ऐसा लगता है जैसे मोमबत्ती अब वहाँ नहीं है। मोमबत्ती की रोशनी अभी भी वहाँ है, लेकिन आपके पास एक उज्ज्वल रोशनी है। तो, ऐसा नहीं है कि मोमबत्ती की रोशनी कोई रोशनी नहीं है; यह वहाँ है, लेकिन जाहिर है, अगर आपके पास अब कुछ बेहतर है, तो उस अर्थ में, मोमबत्ती की रोशनी एक तरह की फीकी महिमा है क्योंकि आपके पास एक बेहतर है।

यह एक तुलना है। यह बेकार की बात नहीं है, बल्कि तुलना की बात है कि नई वाचा की महिमा पुरानी वाचा की महिमा से कहीं ज्यादा बेहतर है और उससे बढ़कर है। इसलिए, हम यह नहीं कहेंगे कि पुरानी वाचा बेकार है, लेकिन हम सिर्फ यह कह रहे हैं कि नई वाचा की तुलना में, जब आपके पास 100 सफ़ेद बत्तियाँ या 200 सफ़ेद बत्तियाँ हैं, तो आप मोमबत्ती का इस्तेमाल क्यों करेंगे? आप कहते हैं, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है क्योंकि मेरे पास इससे बेहतर कुछ है।

यदि आप साधारण चूल्हे पर खाना बना रहे हैं, और कोई आपके घर में गैस चूल्हा या गैस चूल्हा ले आता है, तो मुझे अब इसकी आवश्यकता नहीं है। बिल्कुल यही बात है। तो अब आप पाएँगे कि पॉल के अनुसार, पद 7 से 18 तक का यह भाग बहुत ही महत्वपूर्ण है, और हम इसे यथासंभव सावधानी से पढ़ना चाहते हैं क्योंकि आप पाएँगे कि पॉल अब उद्धरण दे रहा है, मैं निर्गमन अध्याय 34 के पद 29 से 35 का उल्लेख कर रहा हूँ।

हमें याद रखना चाहिए कि पौलुस ने निर्गमन 34, 29 से 35 में वर्णित कथाओं के चयनित बिंदुओं पर टिप्पणी की है। अब वापस चलते हैं, आइए श्लोक 7 पर वापस चलते हैं। अब, यदि नक्काशीदार और अक्षरयुक्त पत्थर की पट्टियों की सेवकाई इतनी महिमा में आई कि इस्राएल के लोग मूसा के चेहरे पर महिमा के कारण उसकी ओर नहीं देख सकते थे, एक महिमा जो अब अलग रखी गई है। आत्मा की सेवकाई कितनी अधिक महिमा में आएगी? क्योंकि यदि दण्ड की सेवकाई में महिमा थी, तो औचित्य की सेवकाई में महिमा और भी अधिक होगी।

तो, इन तीन आयतों में, आप मूसा के साथ जो हुआ उसका एक संकेत देखते हैं। आप देखते हैं, जब मूसा माउंट सिनाई से नीचे उतरे, तो उनके पास दो पट्टियाँ थीं जिन पर दस आज्ञाएँ लिखी हुई थीं, उनका चेहरा चमक रहा था। यह इतना चमकीला था कि इस्राएली लगातार उनकी ओर नहीं देख पा रहे थे, और उन्हें अपने चेहरे ढकने पड़े; हम इसे नहीं देख सकते थे।

तो फिर, पॉल तर्क देता है, अगर व्यवस्था देने में इतनी महिमा थी, उस सेवकाई या प्रशासन में जो मृत्यु लाती है और लोगों को दोषी ठहराती है, तो फिर आत्मा की महिमामय सेवकाई कितनी अधिक होगी जो धार्मिकता लाती है? मेरा मतलब है, मूसा का चेहरा चमक रहा था, और हम इसे

नहीं देख सकते। और पॉल कहता है, ठीक है, अगर आप इसे देख सकते हैं, तो सोचें कि अब हमारे पास क्या है। सोचें कि परमेश्वर ने अब मसीह में क्या किया है।

यह कितना अधिक गौरवशाली होगा। पुरानी व्यवस्था की जो विशेषता और सकारात्मकता थी, वह नई अर्थव्यवस्था की भी विशेषता होगी, लेकिन अधिक मात्रा में। पुरानी व्यवस्था गौरवशाली थी।

नई व्यवस्था में महिमा है। लेकिन नई व्यवस्था, नई अर्थव्यवस्था, इससे भी बड़ी है। इसलिए, पौलुस अपने विरोधियों की तुलना में अपनी सेवकाई की श्रेष्ठता दिखाने के लिए दो वाचाओं की कल्पना का उपयोग करता है।

वह दोनों वाचाओं की सेवकाई और प्रभावशीलता के बीच अंतर करता है और देखता है कि यह नई वाचा दोनों मामलों में अधिक गौरवशाली है। सबसे पहले, वह देखता है कि नई वाचा अपनी सेवकाई में पुरानी वाचा से अधिक गौरवशाली है। यह इस तथ्य से प्रकट होता है कि पुरानी वाचा ने पापियों को मार डाला, जबकि नई वाचा पापियों को जीवन देती है।

आप देखिए, कानून आपको आपके पाप दिखा सकता है, लेकिन यह आपके पाप से बाहर निकलने का रास्ता नहीं बताता। प्रभु आपको बताता है, यह पाप है, यह पाप है, यह पाप है, लेकिन इससे आगे आपकी मदद नहीं कर सकता। लेकिन मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर आधारित, नई वाचा के तहत आने वाला परमेश्वर का अनुग्रह, दिव्य क्षमा प्रदान करता है।

आप न केवल पाप देखते हैं, बल्कि आप उससे बाहर निकलने का रास्ता भी देखते हैं - अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से जीवन की ओर जाने का रास्ता। व्यवस्था दण्ड और मृत्यु की घोषणा करती है, लेकिन सुसमाचार जीवन और मेल-मिलाप प्रदान करता है।

फिर, इस वाचा की सेवकाई के संदर्भ में भी, पुरानी वाचा की सेवकाई समाप्त हो गई, जबकि नई वाचा की सेवकाई जारी है। पद 12 से 18 में, पौलुस परदे और परदा हटाने के बारे में बात करना शुरू करता है। शुरूआत करने के लिए 12 और 13 को देखें।

वह कहता है, 12 और 13, क्योंकि यदि जो अलग रखा गया था, क्षमा करें, श्लोक 12, तब से हमारे पास ऐसी आशा है, हम बहुत साहस के साथ कार्य करते हैं। हम बहुत साहस के साथ कार्य करते हैं, मूसा की तरह नहीं, जिसने अपने चेहरे पर परदा डाला था। देखिए, 12 और 13 में, पॉल दिखाता है कि नई वाचा के प्रतिभागियों के रूप में, वह और उसके साथी प्रेरित और प्रचारकों को बहुत पक्की आशा थी कि यह एक स्थायी, अपरिवर्तनीय वाचा थी, जिसे कभी भी बदला नहीं जा सकता था, और कभी भी, मेरा मतलब है, वैभव में पार नहीं किया जा सकता था।

यह उनके प्रचार में साहस और आत्मविश्वास का कारण था। उनके पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं था, लेकिन उनके पास निडर मोमबत्ती के लिए हर कारण था। आप देखते हैं कि पद 12 में, खुलेपन का यह विचार पौलुस को निर्गमन 34, 29 से 35 पर अपनी टिप्पणी जारी रखने के लिए प्रेरित करता है।

आप देखिए, जिस अंश का हमने कुछ समय पहले उल्लेख किया था, उसमें बताया गया है कि बैठक में मूसा और यहोवा के बीच प्रत्येक मुठभेड़ के बाद, जब भी मूसा वापस आता था, तो वह अपना चेहरा ढक लेता था। वे उसके चेहरे की चमक से चकित हो जाते थे। जब वह उनसे बात करना समाप्त कर लेता था, तो वह अपना चेहरा ढक लेता था, लेकिन जब भी मूसा यहोवा से बात करने के लिए उसके सामने जाता था, तो वह बाहर आने तक अपना चेहरा ढके रखता था।

अब, हालाँकि पुराने नियम में स्पष्ट रूप से यह नहीं लिखा है कि मूसा के चेहरे की चमक धीरे-धीरे फीकी पड़ गई और फिर गायब हो गई, लेकिन हम पुराने नियम में यह नहीं पढ़ते हैं कि पौलुस ने यह निष्कर्ष निकाला कि मूसा द्वारा अपना चेहरा ढकने या छिपाने का कारण इस्राएलियों को मूसा की चमक से चकाचौंध होने से रोकना नहीं था, बल्कि उन्हें तब तक देखने से रोकना था जब तक कि उसके चेहरे से परावर्तित महिमा की चमक पूरी तरह से खत्म न हो जाए, नहीं। पौलुस उन्हें यह सिखाने का प्रयास कर रहा था कि नव स्थापित व्यवस्था का ग्रहण लगना और खत्म हो जाना तय था। नव स्थापित व्यवस्था का ग्रहण लगना और खत्म हो जाना तय था।

कुछ टिप्पणीकारों ने सुझाव दिया है कि मूसा के चेहरे पर पर्दा इसलिए डाला गया था ताकि इस्राएली उस क्षणभंगुर चीज़ के अंत को न देख सकें। दूसरों का मानना है कि मूसा लोगों को यह एहसास दिलाने की व्यक्तिगत शर्मिंदगी से बचना चाहता था कि उसके चेहरे की चमक फीकी पड़ रही है। मुझे नहीं लगता कि इनमें से कोई भी बात पॉल की चिंता थी।

पॉल बस इतना ही कह रहा था कि हम एक बेहतर वाचा के सेवक हैं, और यह बेहतर वाचा वह महिमा है जो कभी मुँह नहीं मोड़ती, कभी फीकी नहीं पड़ती, बस। इसलिए, हम वहीं रुकते हैं जहाँ पॉल रुकता है। इस समय हमारे लिए घूँघट पर घूँघट क्यों प्रासंगिक नहीं है, लेकिन पॉल अपनी सेवकाई के संदर्भ में, परमेश्वर ने उसे क्या बनने के लिए बुलाया है, इस संदर्भ में क्या कह रहा है? वह कह रहा है कि उसकी सेवकाई अपनी प्रभावशीलता में पुरानी सेवकाई से अधिक गौरवशाली है।

हालाँकि इस्राएल ने मूसा के चेहरे पर परमेश्वर की महिमा देखी, और वे डर गए, लेकिन उन्होंने परमेश्वर के नियम का पालन नहीं किया। उन्होंने परमेश्वर की महिमा देखी, लेकिन वे सत्य से डरे हुए और अंधे थे। आज भी, वह नियम जो अपने पालनकर्ताओं को बंधन में रखता है, उनके दिलों से पर्दा हटाने में असमर्थ है।

हमारे दिनों में अभी भी ऐसे लोग हैं जो कानून के द्वारा परमेश्वर के पास आना चाहते हैं। जब आप आयत 14 और 15 को देखते हैं, तो आप पाते हैं कि मूसा ने एक प्रयास किया था। आयत 14 और 15 में उसका चेहरा ढकने का प्रयास सराहनीय था, लेकिन उनके मन कठोर हो गए थे। आज भी, जब वे पुरानी वाचा को पढ़ते हैं, तो वही परदा अभी भी वहाँ है क्योंकि केवल मसीह में ही इसे अलग रखा गया है।

आप देखिए, मूसा का घूँघट करने का प्रयास सफल नहीं हुआ। मेरा मतलब है, उसके घूँघट वाले चेहरे के महत्व को पहचानने के बजाय, इस्राएलियों की धारणा शक्ति मंद हो गई। आप देखिए, पौलुस को इस आध्यात्मिक असंवेदनशीलता का सबूत इस तथ्य में मिलता है कि जब तक वह

जीवित था, जब आराधनालय में पुरानी वाचा पढ़ी जाती थी, सुनिए, पौलुस के समय में, जब आराधनालय में पुरानी वाचा पढ़ी जाती थी या टोरा का अध्ययन किया जाता था, यहूदियों की मूसा के आदेश की अस्थायित्व, क्षणभंगुरता को पहचानने की क्षमता क्षीण हो गई थी। वे अभी भी इसे नहीं पहचान पाए।

उनके दिलों पर एक परदा पड़ा था, जो मूसा के चेहरे पर पड़े परदे के समान था। पौलुस इसे वही परदा कह सकता है। क्यों? दोनों ही मामलों में, परदे ने दर्शन को रोका।

आपके परदे ने एक दर्शन को रोका, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, या शायद इसलिए कि यह मोजेक अर्थव्यवस्था की क्षणभंगुर प्रकृति के बारे में अज्ञानता के परदे के समान था। अविश्वासी यहूदी के मामले में यह परदा नहीं उठा, क्योंकि जब वह मसीह के पास आया, तभी परदा हटा। और मैं आपको बता दूँ, सिर्फ अविश्वासी यहूदी ही नहीं, आज भी बहुत से लोगों के मन में परदे हैं।

आप मसीह के बारे में बात करते हैं, यह उनके लिए कोई मतलब नहीं रखता। निर्गमन 34 34, जब आप इसे सेप्टुआजेंट में पढ़ते हैं, तो कहता है कि जब भी मूसा प्रभु से बात करने के लिए उनके सामने जाता था, तो आप श्लोक 16 में यही देखते हैं: वह बाहर जाने तक घूंघट को हटा देता था। यह निर्गमन 34 34 सेप्टुआजेंट में है।

जब भी मूसा प्रभु के सामने गया। अब सेप्टुआजेंट पुराने नियम का ग्रीक संस्करण है। हम इसका सहारा ले रहे हैं क्योंकि हम देख रहे हैं कि मूसा ने क्या उद्धृत किया, पौलुस ने क्या उद्धृत किया ताकि इसे समझाया जा सके।

वह बाहर जाने तक घूंघट को हटाता था। यह दिलचस्प है कि केवल तीन यूनानी शब्द ही समान रहते हैं, क्योंकि यहाँ पौलुस इस आयत का संकेत देता है, और वह काल को बदल देता है। यहाँ आयत 16 में क्रिया का विषय व्यक्त नहीं किया गया है, लेकिन जब कोई प्रभु की ओर मुड़ता है, तो पर्दा हट जाता है।

क्रिया का विषय वास्तव में अव्यक्त है। यह पद 15 से एक यहूदी का हृदय हो सकता है, यह यहूदी हो सकता है, यह इस्राएल हो सकता है, यह एक व्यक्ति हो सकता है, यह एक गैर-यहूदी हो सकता है। यहूदी या गैर-यहूदी।

मुझे लगता है कि आखिरी विकल्प बेहतर है, लेकिन पॉल के संदर्भ में, पॉल यहूदी के बारे में सोच रहा है, लेकिन यह देखना बेहतर है कि जब कोई प्रभु की ओर मुड़ता है, चाहे वह यहूदी हो या गैर-यहूदी, पर्दा हट जाता है। इसलिए आज, जब कोई भी प्रभु की ओर मुड़ता है, तो पर्दा हट जाता है। पद 16 में पॉल क्या करता है? वह पद 14 में जो पहले ही कह चुका है, उसे फिर से दोहराता और बढ़ाता है।

यही वह बात है जो वह पद 16 में कहता है, कि केवल मसीह में ही परदा हटाया जाता है। जब कोई व्यक्ति प्रभु की ओर मुड़ता है और अपने अंदर प्रभु को पाता है, प्रभु की पूर्णता का अंत, प्रभु

अब हृदय से परदा पूरी तरह हटा देता है। अब व्यक्ति की आध्यात्मिक अनुभूति नीरस नहीं रहती।

व्यक्ति को यह एहसास हो जाता है कि अनुग्रह का यह समय, परमेश्वर का अनुग्रह, अब व्यवस्था से ऊपर उठ गया है। इसीलिए पौलुस 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 पद 17 में कह सका कि यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। नई सृष्टि और अंश कहता है कि पुराना चला गया है; नया आ गया है।

फिर आप पद 17 पर जाएँ। हम पद 17 पर जाते हैं। अपने संदर्भ से बाहर, यह पद यह सुझाव दे सकता है कि पौलुस जी उठे मसीह की पहचान आत्मा के साथ कर रहा है।

उस आयत ने बहुत सारे तर्क और चर्चाओं को जन्म दिया है। अब, प्रभु आत्मा है, और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है। अब, स्पष्टीकरण पर जाने से पहले, मैं यह कहना चाहूँगा कि कभी-कभी हम इसका उपयोग करते हैं: जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है। मैं इसे उपासना करने की स्वतंत्रता, गाने की स्वतंत्रता, ताली बजाने की स्वतंत्रता के रूप में उद्धृत करूँगा, लेकिन कृपया मेरी बात समझिए। पॉल उस अंश में ऐसा नहीं कह रहा है।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको ताली नहीं बजानी चाहिए या जो भी आप करना चाहते हैं, वह नहीं करना चाहिए, लेकिन हम जो कह रहे हैं वह यह है कि वह आयत उस उद्देश्य के लिए नहीं है। पॉल नई वाचा, पुरानी वाचा, आत्मा और व्यवस्था के संदर्भ में बात कर रहा है, और यही एक साथ तुलना है। तो, यह चिल्लाने की स्वतंत्रता, गाने की स्वतंत्रता, नाचने की स्वतंत्रता नहीं है।

बेशक, आपको वह सब करने की आज़ादी है जो आप करना चाहते हैं। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि 2 कुरिन्थियों अध्याय 3 पद 17 के संदर्भ में, यह उत्तर नहीं है, यह उस अंश का अर्थ नहीं है जैसा कि हम इसे उद्धृत करते हैं और जैसा कि हम इसका उपयोग करते हैं। लेकिन फिर से कहने के बाद, नृत्य करने के लिए स्वतंत्र महसूस करें, जो भी आप करना चाहते हैं करने के लिए स्वतंत्र महसूस करें।

तो, संदर्भ से बाहर, मेरा मतलब है, पॉल क्या कह रहा है? अब, प्रभु आत्मा है, और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है। सवाल यह है कि यहाँ प्रभु, वह किसकी ओर इशारा कर रहा है? संदर्भ से बाहर, ये आयतें यह सुझाव दे सकती हैं कि पॉल जी उठे मसीह की पहचान आत्मा से कर रहा है। कुछ विद्वान इस दृष्टिकोण को मानते हैं।

लेकिन श्लोक 17 श्लोक 16 की व्याख्या करता है कि जब कोई प्रभु की ओर मुड़ता है, तो पर्दा हट जाता है। निर्गमन अध्याय 34 श्लोक 34 के उद्धरण में जिस प्रभु का उल्लेख किया गया है, अब यहूदी को पर्दा हटाने के लिए किसकी ओर मुड़ना चाहिए, वह कोई और नहीं बल्कि जीवित परमेश्वर की जीवन देने वाली आत्मा है। तो, यह आत्मा के बारे में पुष्टि है, मसीह के बारे में नहीं।

यह आत्मा के कार्य का वर्णन करता है, उसकी पहचान का नहीं। यह पहचान का मामला नहीं है। आप देखिए, यह एक दृष्टिकोण है।

एक अन्य दृष्टिकोण मसीह और आत्मा के बीच एक कार्यात्मक समानता पाता है। श्लोक 14 में, यह मसीह है जो पर्दा हटाता है। यह मसीह है जो पर्दा हटाता है।

पद 16 में, यह आत्मा है। और फिर, कुछ लोग मानते हैं कि हरक्यूलिस, या मसीह, को जीवन देने वाली आत्मा के रूप में पहचाना जाता है। पद 17बी में पॉल का कहना है कि यद्यपि आत्मा प्रभु है, जिसे अधिकार का प्रयोग करने का अधिकार है, उसकी उपस्थिति मुक्ति लाती है, बंधन नहीं।

वह न केवल पर्दा हटाता है, बल्कि वह व्यक्ति को पाप के बंधन, मृत्यु के बंधन और धार्मिकता प्राप्त करने के साधन के रूप में कानून के बंधन से भी मुक्त करता है। यही वह स्वतंत्रता है जिसके बारे में वहाँ बात की गई है। यही स्वतंत्रता है।

जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ आज़ादी है। किससे आज़ादी? पाप के बंधन से आज़ादी। पाप के बंधन से आज़ादी।

मृत्यु से मुक्ति। धार्मिकता प्राप्त करने के साधन के रूप में कानून की स्वतंत्रता। इसलिए, जब वह कहता है कि जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है, तो वह स्वतंत्रता की बात कर रहा है, न केवल पाप करने की, बल्कि पाप से मुक्ति की।

फिर आप पद 18 पर आते हैं, उन्होंने कहा, और हम सभी खुले चेहरों से प्रभु की महिमा को देखते हुए, जैसे कि दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं, एक ही छवि में एक डिग्री से दूसरी डिग्री तक महिमा में परिवर्तित होते जा रहे हैं। क्योंकि यह प्रभु आत्मा से आता है। पद 4 से 6 में, पौलुस ने पहले से ही मुख्य रूप से अपने प्रेरितिक मंत्रालय के बारे में बात की थी।

अब, जब वह पद 18 में निष्कर्ष पर पहुंचता है, जब वह निर्गमन अध्याय 34 पर अपनी टिप्पणी की पृष्ठभूमि के विरुद्ध, नई वाचा की श्रेष्ठता के बारे में निष्कर्ष पर पहुंचता है, तो वह सामान्य रूप से ईसाई अनुभव का उल्लेख करता है। पद 4 से 6 उसकी सेवकाई के बारे में थे, लेकिन पद 18 उसके अपने अनुभव और सामान्य रूप से ईसाइयों के अनुभव से परे है। नई वाचा के तहत, न केवल एक पुरुष, या न केवल एक महिला, बल्कि सभी ईसाई अब प्रभु की महिमा को देखते हैं और प्रतिबिम्बित करते हैं।

और फिर, इसके अलावा, यहूदियों के विपरीत जो अभी भी परदे के दिलों के साथ व्यवस्था पढ़ते हैं, आज ईसाई, खुले चेहरों के साथ, सुसमाचार के दर्पण में परमेश्वर की महिमा को देखते हैं, जो मसीह में है। फिर से, महिमा प्रदर्शित नहीं होती है, बाहरी रूप से चेहरे पर नहीं, बल्कि हमारे चरित्र में आंतरिक रूप से प्रदर्शित होती है, कि हमारा जीवन परमेश्वर की महिमा को दर्शाता है। हमारा व्यवहार, हमारा स्वभाव, परमेश्वर की महिमा प्रकट होती है।

अपनी तीव्रता, चमक, सुंदरता, चमक या चमक खोने के बजाय, नई वाचा के तहत अनुभव की जाने वाली महिमा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है जब तक कि मसीह अंततः प्राप्त नहीं कर लेता, जब तक कि मसीही, बल्कि, अंततः जी उठे मसीह के समान एक शानदार शरीर प्राप्त नहीं कर लेता। लेकिन इस बीच, परमेश्वर हमें बदल रहा है। और हम पवित्रता के बारे में बात करते हैं; हाँ, हम पवित्रता के बारे में तात्कालिक होने की बात करते हैं, लेकिन हाँ, पवित्रता प्रगतिशील है।

यह तात्कालिक और प्रगतिशील दोनों है। यह बना रहता है। परमेश्वर हमें पवित्र बनाता है, और वह हमें पवित्र रखता है, हमें बदलता रहता है, और हमारे जीवन को बदलता रहता है। और याद रखें, तम्बू की तरह जहाँ कोई शोर नहीं होना चाहिए, पत्थरों को उसी जगह पर डाला जाना चाहिए; परमेश्वर हमें एक पवित्र मंदिर बना रहा है, हमें तैयार कर रहा है ताकि जब तक हम स्वर्ग पहुँचें, तब तक कुछ भी करने की ज़रूरत न हो।

हम बस उस जगह में फिट हो जाते हैं। इसलिए, परमेश्वर की महिमा हमारे जीवन में प्रकट हो रही है, और हम बदल रहे हैं। और इसलिए, पौलुस यह कहते हुए निष्कर्ष निकालता है कि मसीही चरित्र का प्रगतिशील परिवर्तन प्रभु का कार्य है जो आत्मा है।

आत्मा में परिवर्तन के बाद, आत्मा के माध्यम से मुक्ति मिलती है, और आत्मा के माध्यम से परिवर्तन होता है। आत्मा के माध्यम से स्वतंत्रता मिलती है, और आत्मा के माध्यम से परिवर्तन होता है। इस बारे में बहुत सावधानी से सोचें। हमें विश्वासी कहा जाता है।

परमेश्वर ने हमें अपने पास बुलाया है, और यदि हम सेवक होने का दावा करते हैं, तो हमें यह जानना होगा कि प्रामाणिक सेवकाई का वास्तव में क्या अर्थ है, और ऐसा करते समय हमें अपने आप से कुछ प्रश्न पूछने होंगे। क्या मैं परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित कर रहा हूँ? याद रखें, संक्षेप में, हमें जिस प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है, वह पवित्र आत्मा का प्रमाण-पत्र है। यह दिलचस्प है क्योंकि जब पौलुस पद एक में प्रशंसा के बारे में बात करता है, तो यह केवल संक्षेप में है, लैटिन शब्द कमेंडेयर है, जिसका अर्थ है दो शब्द, दो शब्द एक साथ जुड़े हुए हैं।

इसका अर्थ है एक साथ मिलकर प्रतिबद्ध होना, किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध होना, जिसका अर्थ है प्रतिबद्ध होना या सौपना। क्या हमें पत्रों की आवश्यकता है? पौलुस ने कुरिन्थियों से पूछा कि क्या उसे सिफ़ारिश के पत्रों की आवश्यकता है। और हमें आज खुद से पूछने की ज़रूरत है, क्या मेरे पास वह प्रशंसा है जिसकी मुझे ज़रूरत है, आत्मा द्वारा प्रमाण-पत्र? याद रखें, यह महत्वपूर्ण है कि हमारे पास डिग्री हो, और यह महत्वपूर्ण है कि हम अध्ययन करें क्योंकि परमेश्वर को अज्ञानी प्रचारकों की आवश्यकता नहीं है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

क्योंकि अगर हम वह प्रचार करते हैं जो हम नहीं जानते, तो हम ईसाई धर्म के लिए परेशानी खड़ी करते हैं, और हमारे पास दुनिया भर में बहुत से अज्ञानी प्रचारक हैं जो नहीं जानते कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए, भगवान का शुक्र है कि हम कम से कम वचन का अध्ययन तो कर सकते हैं। लेकिन मैं यह कह रहा हूँ कि आत्मा हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हम खुद को उसके प्रति समर्पित करते हैं क्योंकि हम एक नई वाचा के सेवक हैं जो बेहतर वादों पर आधारित है।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 4, 2 कुरिन्थियों 3, नई वाचा की सेवकाई है।